सच्च की तह तक

जसेकला

सच की तह तक

जसेकला

सच की तह तक

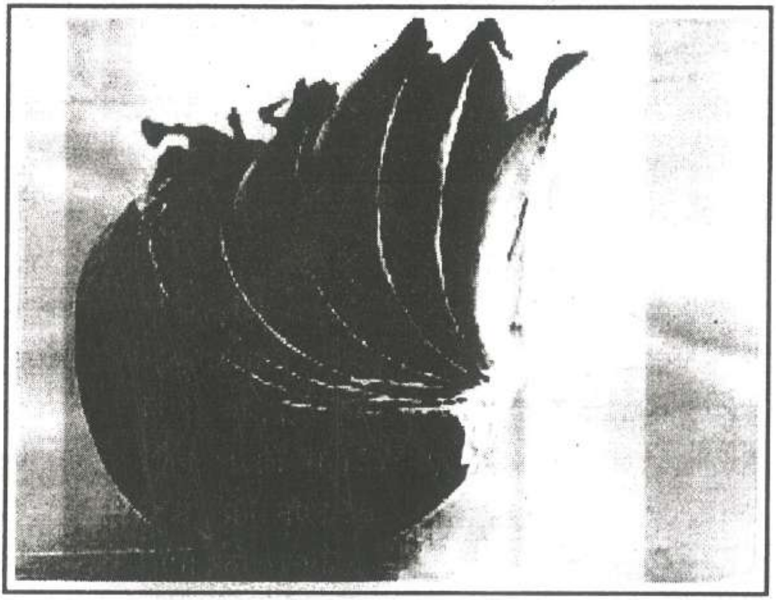

(काव्य-संग्रह)

जसेकला

सच की तह तक

(काव्य-संग्रह)

जसेकला

माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.)

समर्पित

फ़ेसबुक और ब्लॉग
पढ़ने वाले
दोस्तों को
जिनकी प्रतिक्रियाएँ देती हैं
मुझे
हौंसला और हिम्मत
लिखने के लिये।

-जसेकला

अपनी बात

लिखना मेरे लिये बहुत ज़रूरी है क्योंकि इससे मेरे अंदर की बेचैनी कुछ कम होती है। लेखन की प्रक्रिया में मैं रूबरू होता हूँ समाज से और ख़ुद से। सच की तलाश के लिये।

उसकी तह तक पहुँचना चाहता हूँ। खुली कविता के खुले आकाश में आज़ाद पंछी की तरह उडने में मुझे मज़ा आता है। ऐसी ही कुछ रचनाओं को लेकर प्रस्तुत है यह संकलन – 'सच की तह तक' !

-जसेकला

मौसम का चक्कर है कहीं गर्मी कहीं ठंड
सबके जीवन में होते हैं तरह तरह के रंग
दुनिया खेल है द्वंद का कह गए साधु संत
सुख–दुख जैसे आते जाते वैसे शीत बसंत

-जसेकला

अनुक्रम

1. माँ शारदे	13	31. दूर के ढोल	49
2. सक्रियता	14	32. दुर्बल को न सताइये	51
3. जीवन प्रभात	15	33. मत ललचाओ जी	53
4. Say Hello to my Little Friend	16	34. पहली सुलझ गई	54
5. चरणस्पर्श	17	35. रानी और नौकरानी	55
6. रोज़ की राम कहानी	18	36. हैबिट	56
7. मोटीवेशन	19	37. अमीरों का खेल	58
8. जेनरेशन गैप	21	38. नेश्नल गेम	59
9. रिश्तों का चक्कर	23	39. नम्बर गेम और मैजिक	60
10. बसंत मिलन	24	40. वंश का अंश	62
11. यहीं खुशी-यहीं ग़म	26	41. के.बी.सी. : मतलब	64
12. डिस ज्वांइट फै़मिली	27	42. धरती काँप उठी	69
13. विकलांगता	28	43. कारीगर की क़ीमत	71
14. हाइब्रिड	30	44. परदेश का फ़रेब	72
15. दैनिक जीवन में गणित...	31	45. आम के आम गुठली के दाम	73
16. ट्यूशन का टेंशन	32	46. फ़ेस्टीवेल ऑफ़ करप्शन	74
17. सीखना-सिखाना	34	47. राष्ट्रीय जानवर	75
18. चढ़ते सूरज को सलाम	35	48. ग्यारह बजे की रस्म	77
19. नगरों का नक्शा	36	49. प्रत्यक्ष को प्रमाण चाहिए	78
20. इको सिस्टम	37	50. सिस्टम बड़ा है व्यक्ति से	79
21 पशु पक्षी और इंसान	38	51. लेफ्ट राइट सेंटर	80
22 संघर्ष	39	52. उसकी कमीज़ मेरी कमीज़ से..	81
23 सच की तह तक	40	53. मार्च का तिगड़मी महीना	82
24 कुछ तो हो रहा है	41	54. पीले चौंरे वालों का बसंत	83
25 अनामिका की कलम से	43	55. बाज़ार का खेल	84
26 दिल्ली की सड़कों पर	44	56. छोटी दुकान मीठा पकवान	86
27 सायबर क्राइम	45	57. सावधान! हम आ रहे हैं	88
28 गुनहगार कौन	46	58. कौन बनेगा अरबपति !	89
29 सभ्यता ख़तरनाक है	47	59. बजट के मौके पर	91
30 मन चंगा तो कठौती में गंगा	48	60. क्यू	93

61. ख़बरदार-बरखुरदार	95	71. राम नाम सत्य है	110
62. मिल्की कौट्रेक्ट	97	72. बेस्ट बेकरी कांड	114
63. एक दो तीन	98	73. भूखे पेट भजन न होई	115
64. प्रभु! आओ हमारी रक्षा करो	99	74. धर्म और अर्थ	117
65. जागते रहो	100	75. निजता	118
66. एक बीमार सौ अनार	102	76. विडम्बना	119
67. अँधेरे से उजाले की ओर	103	77. मेरी याद में	120
68. छत पर खड़े रहो दिन भर	105	78. संघर्ष के साथी	122
69. नौ–कर	108	79. बगावत	124
70. सैंसर	109	80. मौत एक हकीकत	125

माँ शारदे !

मेरे मन की वीणा को
संगीत के स्वरों से भर दो
बुद्धि को विवेकी बनाकर
श्वेत हंस जैसी कर दो
ज्ञान की ज्योति जगाकर
स्वर का मुझे सार दो।
किताबें पढ़ता रहूँ
कविताएँ लिखता रहूँ
वाणी से गाता रहूँ
तेरे ही गुण
ऐसा मुझे वर दो
करता रहूँ सेवा
हंसते हुए
उत्साह और ऊर्जा से
मुझको भर दो।

सक्रियता

किताबें पढ़ना ज़रूरी है
जानने के लिए
कैसे लिखा जाता है
पर लिखना सीखने के लिए तो
खुद को ही लिखना पड़ेगा,
वाह–वाह करते हुए
तालियाँ बजाने में
आनंद तो मिलता है
पर अपनी घुटी भांग
पीने का मज़ा ही
कुछ और है,
कलकत्ता में
खेले जा रहे
क्रिकेट मैच को
टी.वी. पर
देखने से
कहीं बेहतर है
अपनी गली में
क्रिकेट मैच खेलना।

✷

जीवन-प्रभात

जा रही थी मैं
इक सुबह
तड़के ही अँधेरे में
अपनी छोटी बहन के साथ
टैनिस की प्रैक्टिस के लिए
अचानक आ गिरा
हमारे सामने सड़क पर
इक घोंसला–
अंडा फूटा
दिखी हमें
इक नन्हीं जान ,
दौड़ता हुआ आया
इक कुत्ता,
हम सहम गए
न जाने उस निरीह पर
क्या बीती होगी उस वक्त
हमारी तो चीख निकल गई
माँ अपने बच्चे को
चोंच में दबाकर फुर्र हो गई ।
सब अपने–अपने रास्ते चल दिए
– हम प्लेग्राउंड की ओर
– कुत्ता डस्टबिन की ओर
-- चिड़ी आसमान की ओर
फूटा अंडा वहीं पड़ा रहा
प्रभात का सूरज उग चुका था ।

✳

Say Hello to my Little Friend

वह बहुत ज़िद्दी है
अक्सर रूठ जाता है
गुस्सा भी हो जाता है
पर चंद मिनटों में
खुद ही मान जाता है।
खिलौनों से खेलते हुए
खुले दिल से हँसता है
उसकी अपनी ही भाषा है
हू– भौं की आवाज़ें करता है
मैं समझ नहीं पाता
उसकी सारी बातें
पर खूब ऊर्जा मिलती है
उस नन्हें बालक से,
वो मेरा नया दोस्त है
वह मुझे परखता नहीं हैं !

✷

चरण-स्पर्श

पैरों की तो क्या
घुटने भी नहीं छूते
बस झूठे ही
प्रणाम कह लेते हैं
संस्कारी दिखने को
न नमस्ते मन से
न सलाम दिल से
दुआ और बधाई भी
फॉर्मल हो गये हैं
कैलकुलेशन के किसी
फार्मूले की तरह
तारीख–दिन व समय को
सैट करके घड़ी में
मोबाइल और ईमेल से
ऐनवक्त पर
स्टैंडर्ड मैसेज भेज देते है
अब तो
बची है बस यही तमीज़
सॉरी, थैंक्यू और प्लीज़।

*

रोज़ की रामकहानी

छह बज गये
अब तो उठना ही होगा
दस बज गये
ऑफ़िस जाना ही पड़ेगा
एक बज गया
चलो लंच भी कर ही लें
पाँच बज गये
दिन गुज़र गया जैसे–तैसे
नौ बज गये
खाकर डिनर
खोल लेता हूँ टी.वी.
देखते–देखते
न जाने कब आँख
झपक जाती है
बिस्तर पर लुढ़क जाता हूँ
अचानक नींद खुलती है
रात के एक बजे हैं
पानी पीकर
फिर सो जाता हूँ
सुबह जल्दी जो उठना है।

✷

मोटीवेशन

पुचकारती हुई
छोटी बच्ची को
माँ बोली –
गुड़िया रानी
दूध का गिलास
जल्दी फिनिश कर दो
फिर डोरेमन देख लेना,
दसवीं क्लॉस में
पढ़ रहे बेटे को
पापा बोले –
गुड्डू राजा
सिर्फ दो घंटे पढ़ लो
फिर खेलने चले जाना,
कुछ नहीं बोलते
पापा को उनके
सुपरवाइज़र–
वो खुद ही 2 घंटे
काम करने के बाद
फ्री हो जाते हैं
पूरी तनख्वॉह के अलावा
उतना ही इंसेटिव पाते हैं
किक्रेट खेल नहीं सकते
इसलिए दिन भर

ताश खेलते हैं
दूध पीने की उम्र नहीं रही
इसलिए डटकर
सोमरस पीते हैं
खूब सोते है
सुनते हुये मोबाइल पर
शीला–मुन्नी के सांग्स
ऐश, मौज और मस्ती है
सरकारी नौकरी सस्ती है ,
प्रेरित करने के लिए
हमने बनाई थी
जो स्कीम
अब करने लगी है
वही हमें पीड़ित।

*

जेनरेशन गैप

जब छोटा था वो
उसे चूहों से
बहुत डर लगता था ,
भागते–चीखते हुए
उस नन्हें बच्चे को
मैं समझाता था :
'कुछ नहीं होगा बेटा'

अब हो गया है
वह बड़ा
मैं बूढ़ा,
आज
खड़े होकर
कम्प्यूटर के सामने
जब चलाया मैंने
माऊस को
तो बेटा चीखा ज़ोर से :
'इसे मत छुओ
आप कुछ नहीं समझते
सब बिगड़ जाएगा'

सच ही तो कहा
उस इंजीनियर बेटे ने
यह बेजान और
तकनीकी उपकरण

मेरे ज़माने का
मूषक थोड़े ही है
जिससे मुझ जैसे
हिन्दी बोलने–लिखने वाले और
डिज़िटली–अनपढ़ इंसान को
डरना नहीं चाहिए ।

✷

रिश्तों का चक्कर

मैं चाहता हूँ उसको
जो किसी और को चाहती है
जिसको वह चाहती है
वो किसी और को चाहता है,
जो मिलता है
वो हमें पसंद नहीं
जो पसंद है
वो हमें मिलता नहीं
और मिल भी जाये अगर
तो पसंद बदल जाती है ,
उम्मींदों व खुशफ़हमियों के
सहारे–किनारे
समझौते करते हुए
तलाश और भटकाव में
ज़िन्दगी यूँ ही गुज़र जाती है !

✱

बसंत-मिलन

झील के किनारे
पार्क में
रंग–बिरंगे और नाज़ुक
फूलों के बीच
अमुआ की डाली वाले
झूले में बैठी
पीताम्बरी साड़ी पहने : कल्पना
दिन के तीसरे पहर की
गुनगुनी धूप में
सुनहरी सरसों को निहारती
गुनगुना रही थी
कोई गीत,
मानो कर रही हो
अनुरोध गगन में
चहलक़दमी करते हुए
कौए से
अपने प्रीतम को
बुला लाने का ।

ट्रेन की सीटी बजे
काफ़ी वक़्त गुज़र चुका
हो गई उदास
सोच में डूबी

'क्या नहीं आए साजन
इस गाड़ी से भी ! '
अचानक
मूंद ली आँखें उसकी
किसी ने
पीछे से आकर,
और यथार्थ की
हथेलियों के
कोमल स्पर्श ने
कल्पना के इंतज़ार का
बस–अंत कर दिया
प्रेम की प्रकृति से
सौंदर्य–सुगंध का रस
बिखराते हुए
सब दिशाओं में।

✱

यहीं खुशी यहीं ग़म

आई हूँ अपने मायके
घर में दो कमरे हैं
बीच मे दीवार
एक में कराह रहे हैं वो
जिनकी हूँ मैं बेटी
पिछले महीने हुए
एक्सीडेंट के असहय दर्द से
गर्म दूध पीते हुए,
दूजे में चीख रही है वो
जो है मेरी बेटी
शादी के नौ बरस बाद
जन्मी पहली संतान
किलकारियाँ भरती हुई
दूध पीने के लिए,
धूप और छाँव की
अजीब ज़िन्दगी
जी रही हूँ
बेटी और माँ का
संयुक्त फ़र्ज़
निभाते हुए !

✸

डिस-ज्वांइट फैमिली

हमारे परिवार में सिर्फ चार सदस्य हैं
हम सब अकेले अलग जगह रहते हैं
मेरा ऑफ़िस है राजधानी दिल्ली में
मैडम जी बुटीक चलाती हैं मुम्बई में
बेटी आई.टी. सेक्टर में है बंगलौर में
बेटा एम.बी.ए. करता है कोलकता में
चारों दिशाओं पर है परिवारी क़ब्ज़ा
न सही चाहे आपस में गहरा जज़्बा ,
हम मोबाइल–नेट पर ही ज़ुड़ पाते हैं
टी.वी. पर एक ही सीरियल देखते हुए
रिमोट से ही डिनर साथ कर लेते हैं
अकेलापन हम सबको ही अखरता है
पर क्या करें फैमिली की ख़ातिर ही
हमें अकेले अलग जगह रहना पड़ता है,
किसी के पास वक्त नहीं कहानी सुनाने का
न ही बच्चे अब किसी की कहानी सुनते हैं
सब अपने आप में मस्त और व्यस्त हैं
तीज–त्यौहार पर घर में कभी
जब इकट्ठे हो भी जायें सभी
तो टी.वी. के रिमोट के लिये
लड़ाई ही होती है
इसलिये दूर से ही
सबका हालचाल पूछ लेते हैं

इस तरह हम जैसे तैसे
परिवार निभा लेते हैं
सोचकर अपने मन को
थोड़ा सुकून देते हुए कि
हालत तो अभी और खराब होगी
हर शख़्स और भी अकेला होगा
किसी की बुआ–मौसी नहीं होगी
कोई मामा–चाचा के बिना होगा।

✱

विकलांगता

कान पर चिपका रहता है मोबाइल
आँखें गढ़ी रहती हैं लैपटॉप पर
पैदल चलने की आदत नहीं रही
दो और दो का जोड़ करने के लिए
लेना पड़ता है
कैलकुलेटर का सहारा
याद कुछ न आये तो
तलाश लेते हैं उसे
इंटरनेट पर ,
सुविधा बहुत हो गई है
पर बना दिया है
टेक्नोलॉजी ने
थोड़ा बहुत पंगु भी हमें
अपने चंगुल में फंसाकर ,
कविता को कम्प्यूटर पर
एडिट, कट–कापी और पेस्ट से
सेट करते हुए
कागज़ पर कलम से काटना–छाँटना
हम भूलते जा रहे हैं
बस अब हम
दवाइयों का नाश्ता करते हुए
अपनी सेहत बचा रहे हैं।

हाइब्रिड

चौकोर तरबूज़
गोल केला
संतरे जैसे नींबू
लौकी– सी भिंडी
बिल्ली जैसा चूहा
औरत–सा आदमी
आदमी जैसा कम्प्यूटर !

✱

दैनिक जीवन में गणित

इस विषय पर
मेरी बेटी को मिले
स्कूली प्रोजेक्ट की
तैयारी कराते हुए नज़र आये
मुझे कई व्यवहारिक उदाहरण
नाप–तोल की ज़िन्दगी के
मसलन कब किससे मिलना है
कितनी देर के लिए
किसको कितने की गिफ़्ट देनी हे
कितने पैसे चढाने हैं आरती में
किसका फ़ोन नम्बर नोट करना है
कब किसको फ़ोन करना है
किसको नमस्ते कहना है
किसको सलाम कहना है
कितना पढ़ना है
कितना सोचना है
कितना काम करना है
कितने परसेन्ट ईमानदार रहना है,
तिगड़म और जुगाड़ में माहिर
हम सीख गए हैं
अंकगणित और समीकरण की
ज़िन्दगी जीना
बहुत समझदार हो गये है
उपयोगिता के मापदंड पर
समय और पैसे का संतुलन
बैठाना जान गए हैं
क्या फ़ायदा होगा
कौन काम आयेगा !

✷

ट्यूशन का टेंशन

मैं गाँव में पढ़ता था
ट्यूशन के नाम से मुझे चिढ़ थी
स्कूल में पढाई तब भी
कुछ ख़ास नहीं होती थी
मगर जब कोई कहता था मेरे पापा को –
ट्यूशन लगवा दो बच्चे को –
तो लगता था मुझे
जैसे उसने गाली दे दी हो
मेरे दमखम को कम बता रहा हो,
पर अब बात कुछ और है
जितने सब्जेक्ट उतने ही ट्यूटर.
स्वाध्याय की आदत नहीं रही
बस यही इक साल है मेरे बेटे के लिए
ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
कपूरथला के स्कूल में नाम लिखा है
पढ़ता कोटा की कोचिंग क्लॉस में हैं
इंजीनियर–डॉक्टर बनाने की फैक्ट्रियाँ
खुली हैं हर जगह
इधर से डालो बच्चों को उनकी सुरंग में
उधर से सीधे कॉलेज के गेट पर पहुँचेगा
जो न जाने कैसे
उग आये है

कुकुरमुत्ते की तरह
गली, नुक्कड़ और सड़कों पर
साइबर–कुलियों की फौज
तैयार करने के लिए
सब दौड़े जा रहे है
कम्पटीशन का दौर है
कहीं पीछे न छूट जायें
चूहा बनने की रेस में
अपनी पोस्टिग दिल्ली
करवाने के लिए और
रूकवाने के लिए
मैने क्या–क्या पापड़ नहीं बेले
बच्चों की ख़ातिर ।

✷

सीखना-सिखाना

नर्सरी स्कूल की
नई– नवेली मैडम लिखवा रही थी
नन्हें बच्चों से
कर्सिव राइटिंग मे
अंग्रेजी के अल्फ़ाबेट्स
डाँटती हुई झुँझलाकर
'क्यूँ नहीं घुमा पाते
लाइन इस तरह
जैसे मैं बताती हूँ'
मन हुआ कहूँ उस शिक्षिका को :
ज़रा तुम भी लिखकर तो देखो
उर्दू के हिज्जे :
किसी के लिए बाएँ हाथ का खेल
दूजे को दाएँ हाथ का खेल भी
नहीं लगता है ।
गुज़र चुके हम
जिन कक्षाओं और परीक्षाओं से
वो हमें आसान लगते हैं
दूसरों को समझाते हुए ,
पर बहुत मुश्किल होता है
कुछ भी नया सीखना
जो हमें नहीं आता
चाहे रोटी पकाना
चाहे कपड़े धोना
चाहे साइकिल चलाना या फिर
बच्चों जैसा सच्चा बनना ।

✳

चढ़ते सूरज को सलाम

जब वह स्कूल में पढ़ता था
तो रोज उसे डांट पड़ती थी
क्लास में ऊटपटांग सवाल पूछने के लिए
होमवर्क ग़लत– अधूरा करने के लिए
प्लेरग्राउंड में ज़्यादा वक्त बरबाद करने के लिए
उसे चेतावनी भी मिली
कम हाज़िरी के लिए ,
इतने नालायक छात्र का
फोटो सुशोभित है अब
स्कूल के मुख्यद्वार पर
जिसे फांदकर वह चला गया था
मैच खेलने
इक दोपहर और फिर मुड़कर
उसने कभी नहीं देखा
स्कूल का मुँह
जिसे उस पर है नाज़
जो छाया है आज
मीडिया की सुर्खियों में
गोल्फ़ चैम्पियन बन कर ,
किंतु कहावत आज भी सुनाई देती है
स्कूल के गलियारों में –
"पढ़ोगे लिखागे बनोगे नवाब
खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब।"

✸

नगरों का नक्शा

मैं जा रहा था बस में
दिल्ली से मुजफ़्फ़रनगर
मेरठ आने से पहले ही
बीसियों कॉलेज नज़र आये
इंजीनियरिंग– मेडीकल के
फैक्ट्ररी कॉम्पलेक्स की तरह
किसी भी शहर में जाओ
वो वैसा ही लगता है
जहाँ से चले थे
उस शहर के लिये ,
लोगों की भीड़
गाड़ियों का शोर
मल्टीस्टोरी फ़्लैट
विज्ञापन के बड़े–ऊँचे बोर्ड
सड़को के ऊपर पुल
सड़कों के नीचे पुल ,
शहर फैलते जा रहे हैं
अपनी हदें पार करते हुए
दैत्याकार की शैली में
गाँवों–खेतों को लीलते हुए ।

इकोसिस्टम

उगाया गेहूँ
किसान ने
पीसा उसे
मज़दूर ने
खरीदा आटा
मैंने , दुकान से
पकी रोटी
माँ के हाथों
परोसा जिसे
बहन ने,
भोजन की थाली
कराती है अहसास
मुझे
रिश्तों की ज़रूरत का
जीने के लिए
और
ये रिश्ते
सारे समाज में
हर वक्त होते हैं
हर जगह होते हैं
सफ़र में, परिवार में
घर पर, ढाबे पर !

✷

पशु-पक्षी और इंसान

कल झील के किनारे
घूमते हुए
बंत्तखों को देख
मैं दार्शनिक हो गया :
क्या यही भोग योनियाँ हैं !
'अपना दर्द किसी को बता नहीं सकते
अपने मन की किसी को कह नहीं सकते
भूख लगने पर मनपसंद खा नहीं सकते '

लोग तो बस आते हैं
घूमने–टहलने
पॉप–कार्न और आटे की गोलियाँ डालकर
चले जाते हैं ,
किसी ने कभी सोचा
उनका क्या खाने को जी चाहता है !

मोबाइल के कैमरे से
फ़ोटो खींचकर
उनसे रिश्ता बनेगा क्या ?
जिनकी
उम्र भी नहीं जानते हम
और न ही उनके नाम
बस कह देते हैं पड़ोसी को :
'झील मे दस सुंदर डक्स है
बच्चों को साथ लेकर आप भी देखने चले जाना !'

✱

संघर्ष

सच के लिए वही मर सकते हैं
सच के लिए वही लड़ सकते हैं
सच के लिए वही अड़ सकते हैं
जो सच बोलते हैं , सच सुनते हैं
जो सच जानते हैं , सच जीते हैं
सत्य के लिए आग्रह तो ज़रूरी है
पूर्वाग्रहों से मुक्ति भी हमें पानी है !
झूठ के ज़माने में बहुत हिम्मत चाहिए
इस सच को जीने–बोलने–लिखने के लिए
जो मन के अन्दर का रूहानी ताक़त है!

✷

सच की तह तक

छीलते हुए
प्याज की परतें
आ जाते हैं
आँखों में आँसू
धुंधलाते हुए उनको
कुछ देर के लिए
फिर पैनी हो जाती है
हमारी नज़र
कचरा निकल जाने पर ,
खुद के केंद्र तक
पहुँचने के लिए भी
आवरण की परतों को
धीरे–धीरे ही सही
हटाना ज़रूरी है ।

✷

कुछ तो हो रहा है

टी.वी. पर आंदोलन की
खबरें सुन–देखकर
मैंने फ़ैसला लिया
अपने क़स्बे में भी
मोमबत्ती जुलूस निकालने का ,
बड़े द्वंद्व में रहा मैं
किसको बुलाऊँ किसको नहीं
फिर कुछ सोचकर
डाल दिया फ़ेसबुक पर
ब्यौरा ईवेंट का
कुछ दोस्तों को एस.एम.एस. कर दिया
जिसे फॉरवर्ड कर दिया कुछ ने ,
जुलूस में जो लोग आये
उनकी तादाद देखकर
मैं बहुत प्रभावित हुआ
पर उनमें कई चेहरे ऐसे थे
जिन्हें देखकर मुझे तकलीफ़ हुई
उनका मुद्दे से दूर–दूर तलक
कोई वास्ता नहीं था
जब जुलूस आगे बढ़ा
तो मैं हैरान था
वही चेहरे ज़ोर से
नारे लगा रहे थे

उन्हीं के वाणीबल पर
कार्यक्रम चल पाया ,
क्या असर हुआ
हमारे जुलूस का
मैं कह नहीं सकता
किंतु अगली सुबह के
अखबार में छपी
फोटो सहित खबर
पढ–देख कर
सब बहुत खुश थे,
हाजिरी दर्ज करा दी
हमारे क़स्बे ने भी
देश के बड़े आंदोलन में ,
तह में जाये बिना
मुद्दा सतही बन गया
मीडिया को मसाला मिल गया
तीन दिन तक डोसा बनाने के लिये ।

*

अनामिका की कलम से

मैं चढ़ी एक बस में
सफ़र करने के लिये
जिसने मेरी यात्रा ही
खत्म कर दी झटके में
मेरे भी अरमान थे
अगले जन्म में भी मै
लड़की ही बनना चाहूँगी, पुरूष नंहीं
पच्चीस साल बाद मिलूँगी
तब तक कानून बना लो
अपना समाज सुधार लो
फिलहाल तो तुम, भूल जाओगे मुझे
नये साल के जश्न में
बस हो सके तो
भोंडे गाने मत सुनना
शराब के नशे में धुत मत होना
माँ–बहन की गाली मत बकना
जहाँ कहीं कुछ गलत हो
नारी के साथ
चुप मत रहना
अपने बेटों को सिखाना
औरत की इज़्ज़त करना
और अपनी बेटियों को
खूब हिम्मती बनाना ,
बस चलाने वाले भाइयों से
तो यही कहना है
सुदर्शन जी की कहानी "हार की जीत"
पढ़ना, सुनना और गुनना ।

✱

दिल्ली की सड़कों पर

रैडलाइन ने लोगों को कुचला
बसों का रंग बदल दिया गया
कोर्ट को धुआँ नागवार था
गाड़ियों का ईंधन बदल गया
काले शीशे के पीछे गलत था
उस पर प्रतिबंध लग गया
चाहे चैकअॅप भी शुरू हो जाये
शराबी वाहन चालकों का
क्या हादसे रुक पायेंगे
मौजूदा और नये कानूनों से
जब कूड़ा–कचरा भरा हो
आदमी के दिमाग में ही ।

*

साइबर- क्राइम

किसी का सिर
किसी का धड़
कैंची से काटा
गोंद से चिपकाया
सनसनी मचाई
अफ़वाह फैलाई
पासवर्ड तोड़ा
वाइरस छोड़ा
दूसरे की कविता
एडिट कर छपवाई
अपने नाम से
फ़र्ज़ी खाता खोला
पैसा निकाला
देकर उसे धोखा
कम्प्यूटर के मत्थे
ग़लती को थोपा ।

✺

गुनाहगार कौन ?

शराब पीने वाला
शराब बेचने वाला
शराब बनाने वाला
या फिर सरकार
शराब की बिक्री से
रिवेन्यू कमाने वाली
जिसके होने की वजह ही
सिर्फ लोकहित है
यदि सभी हैं कुसूरवार
तो कौन कितना !
यही सवाल पूछना है मुझे
हत्यारों और हथियार के बारे में ।

सभ्यता ख़तरनाक है !

इस धरती पर रहने वाले
सब प्राणी खाते हैं
सब प्राणी सोते हैं
सब प्राणी डरते हैं
पर सोचते केवल इंसान ही हैं ,
जानवर के इंसानों को खाने की
ख़बर तो यदाकदा ही सुनते हैं
आदमी रोज़ जानवर मारता है
वह देर रात तक टी.वी. देखता है
सुबह अलार्म लगाकर जगता है
जो मन आता है खाता है
वह किसी से नहीं डरता
वह मनमानी करता है
कानून बनाने पड़ते हैं
उसे डराने के लिये ,
मादा और नर होते हैं
जानवर और पक्षियों में भी
पर इस्तेमाल करता है औरत को
आदमी ही एक चीज़ की तरह
उसकी जिस्मानी नुमाईश करते हुये
बाज़ार में विज्ञापन के लिये ,
जानवर और परिंदे नहीं करते
मैथुन हर मौसम में
न ही वे कभी शराब पीते हैं
न ही वे कभी ऐश करते हैं ,
पशुपक्षी बेहतर हैं आदमी से
कई मायनों में,
कभी अपनी मादा का रेप नहीं करते !

*

मन चंगा तो कठौती में गंगा

करते नहीं क़द्र अपने माता–पिता की
वृद्धाश्रम मे समाजसेवा करने जाते हैं
रखते हैं मेड–सर्वेंट अपने घर में
गुरूद्वारे का फ़र्श रोज़ सुबह धोते हैं
जानते हैं अफ़्रीकन एनीमल्स के बारे में
अपनी गली के कुत्तों को कब देखते हैं
अपने रिश्तेदारों का जिन्हें पता नहीं
फ़िल्मी सितारों के वो बर्थडे मनाते हैं
झाँकते नहीं मन के अंदर कभी
मंदिर मे पूजा करने बेनागा जाते हैं
समझते हैं घरवाली को नौकरानी
पड़ोसिन को महारानी मानते हैं
ज़माना ही कुछ ऐसा है
हाथी तो यूँ ही बदनाम है बेचारा
इंसान के दाँत ही है,
दिखाने के कुछ और ,
खाने के कुछ और !

*

दूर के ढोल

मैं पार्क में घूमने गया
दूर की घास हरी–भरी दिखाई दी
वहाँ पहुँचा तो वैसी नहीं थी
मन बैठने को नहीं हुआ
आगे की घास हरी–भरी लगी
यह सिलसिला चलता रहा
और वहीं बैठ गया अंततः
हार थक कर
मैं जहाँ खड़ा था
ख़त्म हुआ इस तरह
मेरा वर्तुल भ्रमण –
मैं केंद्र से दूर
परिधि पर भटकता रहा
कस्तूरी की खोज में
हिरन बना हुआ,
मरीचिकाएँ
रेगिस्तान में ही नहीं होती
पूरी जिन्दगी मे होती है
दूसरे की थाली में पड़ा खाना
ज़्यादा और ज़ायक़ेदार लगता है
पराये का दुख छोटा लगता है
पड़ोसी की बीवी सुंदर लगती है
वर्तमान से हमें घबराहट होती है
पिछली कक्षा आसान लगती है

अगली कक्षा का रोमाँच होता है
अपनी आज की परीक्षा ही
हमें मुश्किल लगती है
जो नहीं है, रखता है वो
उलझाए और बहलाए
हमारे मन को
ख़्वाब और डर में !
ज़िन्दगी बीतती जाती है
वक़्त गुज़रता जाता है
हम चुकते जाते हैं
बाल सफ़ेद होते जाते हैं
धूप में और छाँव में ।

दुर्बल का न सताइए

सरकार टैक्स वसूलती है
आम आदमी को
पानी–बिजली जैसी
बेसिक सहूलियत देने के लिए
एन.जी.ओ. जमा करते हैं
चंदा और फ़ंड
बेसहारा लोगों की
मदद करने के लिए
पब्लिक के पैसे लगाकर
प्राइवेट कम्पनी सड़क बनाती हे
उसे टोल टैक्स से चलाती है
पब्लिक की जेब काटकर
सब खिलवाड़ करते हैं
हाँ, ग़रीब खिलौना है
कोई उसे कस्टोमर बनाता है
कोई उसे क्लायेंट बनाता है
सब अपनी सेवा कर रहे हैं
उसके नाम पर
सरकार स्कीम चलाती है
कंपनी सी.एस.आर. विंग खोलती है
डाकू और कसाई हैं
सारे हुक्मरान–
चाहे पूरे सरकारी

चाहे आधे सरकारी
चाहे गैर सरकारी –
वे ताक़तवर हैं
वे मज़ाक़ उड़ाते हैं
गरीब का, ग़रीबी का
ए.सी. में बैठकर
लंबी बहसें करते हुए
सुट्टा और पैग लगाकर
विकलांगता का प्रतिशत
तय करने के लिए ।

*

मत ललचाओ जी !

थाली में जो है
वो तो खा लो
पेट भर जाएगा
काहे हर स्टॉल पर
भागत–फिरत हो
प्लेट लेकर ,
जैसे कोई रिपोर्ट देनी हो
अपने घर जाकर
कैसा बना था
दावत का खाना
या फ़्री के डिनर की
पूरी कसर निकालनी है ,
अरे भई !
तनिक सब्र करो
अगड़म–बगड़म ठूँस कर
पेट को वेस्टबिन मत बनाओ
हाजमे का कुछ तो ख़याल रखो ।

✷

पहेली सुलझ गई

झील के किनारे खड़ा
डूबने की सोचता हुआ
जैसे ही वो थोड़ा नीचे उतरा
इक नन्हीं मीन
उसके बड़े पैरों में उलझ गई
वो नीचे झुका और
मछली को हाथ में उठाते हुए
दार्शनिक अंदाज़ में बोला
"जा ! मैं तुझे ज़िन्दगी बख़्शता हूँ "
जैसे ही उसने मीन को
हवा में उछाला
जिजीविषा चीख उठी :
मछली जल की रानी है
जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ डर जायेगी
बाहर निकालो मर जायेगी
मन से निराश मैन को
मीन ने फ़लसफ़ा दिया
सबके जीवन की कुछ
ख़ास वजह है
सबके लिए
कुदरत में ख़ास जगह है
और वो
मीठी धरती की
कसैली मिट्टी में
खेलने के लिए
फिर ऊपर आ गया।

✷

रानी और नौकरानी

शादी के पाँच बरस बाद
पड़ोसिन को देखकर
अचानक
वह कैरियर– कांशस हो गई
आर्थिक आजादी की ललक में
ले लिया दाखिला उसने
बी. एड. के स्कूल में –
खुद पढ़ने लगी
घर में मेड रख ली
रोटी बनाने के लिए
कपड़े धोने के लिए ,
बच्चों को कैसे पढ़ाना है
सीख पाई या नहीं
मैं कह नहीं सकता
पर भूल गई वो
जीवन की असली पढाई
दूर होकर
अपनों से और
अपने घर से,
अब नौकरी करने जायेगी
खुद के बच्चों को
किसी और मैडम से
ट्यूशन पढ़वायेगी !

हैबिट

पता है मुझे
सुबह जल्दी उठना
फ़ायदेमंद है
सेहत के लिए
पर मैं ऐसा
कर नहीं पाता ,
पता है मुझे
देर रात जागना
नुकसानमंद है
सेहत के लिए
पर टी.वी. देखना
छोड़ नहीं पाता ।

रोज़ सोचता हूँ
आज आख़िरी दफ़ा है
अगली रात आती है
पिछली बात दुहराती है
पर क्या इतना कम है कि
मैं जानता हूँ
दुर्योधन की तरह,
ग़लत क्या है !
सही क्या है !

और
महाभारत
को लिए
मन के भीतर
जिये जाता हूँ
इसी उम्मीद में,
आदत कभी तो बदलेगी
शराब पीने की
झूठ कहने की !

✷

अमीरों का खेल-ग़रीबों की जेल

लंबा शॉट मारा साहब ने
गोल्फ़ की छड़ी से–छोटी सी गेंद
बहुत ऊँची उठी हवा में
और
पेड़ो के झुरमुट को
पार करती हुई
आँखों से ओझिल
कहीं दूर जा गिरी –
टहलक़दमी करते हुए चल दिए
साहब , अगले शॉट की तैयारी में,
उनके पीछे दौड़े जा रहा था
तेज़ क़दमों से साहब का अटैंडेंट
कंधे पर लटकाए हुए
भारी– भरकम गोल्फ़ किट :
गेंद को तलाशने के लिए,
मैदान के इक कोने में
लगा हुआ था
डेली वेज पर
काम करने वाला माली –
घास संवारने में
गोल्फ़कोर्स की हरियाली को
बरकरार रखने के लिए ,
जेठ की दोपहर थी
रविवार का दिन
तीनों का पसीना बह रहा था –
साहब का तो थाः शौक़ और खेल
पर नौकर और माली की थी जेल ।

✷

नेशनल गेम

कैच हुए
मैच में
सब चिपके टी.वी. से
सिक्स हुआ फ़िक्स ,
वो खेल रहे हैं
हम देख रहे हैं
आज फ़ाइनल है
सब कुछ बंद है,
दफ़्तर–दुकान–रिक्शे
देशप्रेम का जुनून है,
लोग कह रहे हैं
इंडिया आज ज़रूर जीतेगा
मैं कहता हूँ
भारत तो नहीं जीतेगा
इससे क्या मैं
देशद्रोही साबित हो जाता हूँ ?
जो बेहतर खेलेगा वो जीतेगा ,
खेल तो खेल है
ज़िन्दगी भी वही जीतेगा
जो बेहतर जीयेगा ।

✷

नम्बर गेम और मैजिक फ़िगर

गणित बहुत महत्वपूर्ण विषय है
इसके समुचित ज्ञान के बिना
कोई इंजीनियर नहीं सकता
बिजनेस नहीं चलाया जा सकता
संसद भी नहीं चल सकती,
जुगाड़ और तिगड़मबाज़ी के दौर में
समझौता करने के लिए
तालमेल बैठाने लिए
निहायत ज़रूरी है
समीकरण और अंकगणित की जानकारी
मैनेजमेंट और मैनीपुलेशन के लिए,
किसको खरीदना है कितने में
किसको बेचना है कितने में
किसके अंक में बैठना है
किसके संग रहना–सोना है
किस को इफ़्तार पार्टी में बुलाना है
किसको कहाँ से टिकट देना है
नफ़ा–नुकसान का हिसाब लगाना है
काम आ सकने वालों से ही रिश्ते बनाने हैं,
इंसटैंट और फ़टाफ़ट के इस ज़माने में
कोई किसी का पक्का दोस्त नहीं होता
वक्त पे जो आज हमारे काम आ गया

बस वो ही अपना सगा और सखा है
भाई–बहनों ! हमारा तो यही नारा है
मैं तुम्हें नोट दूँगा –
तुम मुझे वोट देना
मैं तुम्हें बचाऊँगा – तुम मुझे बचा लेना।

✷

वंश का अंश

बाबर का बेटा हुमायूं
हुमायूं का बेटा अकबर
अकबर का बेटा जहाँगीर
जहाँगीर का बेटा शाहजहाँ
बहुत मज़ा आता था
नामों का क्रम
याद करने में
इतिहास पढ़ते हुए ,
आने वाली पीढ़ी को
थोड़ी मुश्किल होगी
क्योंकि
बैठते जा रहे हैं
गद्दी पर
किसी की बीवी
किसी का दामाद
किसी का भाई
किसी का भतीजा ,
अलग अलग पार्टियों में रहते हैं
एक ही परिवार के कई लोग
ताकि ताकत बनी रहे उनकी
ताकि उनका काम चलता रहे
चाहे किसी की सरकार बने ,
आरक्षित कर लेते हैं कुर्सियाँ

अपने रिश्तेदारों के लिये
न कोई खाली आता है
न कोई खाली जाता है
विरासत में पैदा होता है
कोई चाँदी की चम्मच मुँह में लेकर
कोई हाथ में टूटा कटोरा लेकर ,
इंजीनियर का बेटा इंजीनियर बन जाता है
डॉक्टर की बेटी डॉक्टर बन जाती है
सब अपना ख़ानदान बढ़ा रहे हैं
जींस में कुछ खास नहीं होता है
बस बपौती और पैसे के बल पर
नालायक पूत लायक बन जाते हैं ,
हाँ ! अगर किसी मोची का बेटा
स्कूल में अच्छे अंकों से पास हो जाये
तो अख़बारों मे
उस अपवाद की खबर पढ़कर
गैरबराबरी के मुद्दे को
हम कम आंक लेते हैं
पैतृक पेशा बन चुका है सब कुछ
बिजनेस, शिक्षा, सर्विस, खेल
फ़िल्म और राजनीति ।

के.बी.सी. मतलबः "कौन बनेगा...या"

(1)

आज के सारे अखबारों में
फुल पेज एड छपा है
वो भी कवर पेज पर
इतना बड़ा विज्ञापनं तो
देश का प्रधानमंत्री मर जाए
तो भी न छपे ।
अरे बाप रे बाप !
साढ़े आठ बज गए
बच्चों ! जल्दी आ जाओ
किताबें पढ़ना छोड़ो
टी.वी. देखने बैठ जाओ
खाना बाद में बनेगा
के.बी.सी. शुरू हो रहा है
इसी में मन लगाओ
लग गया नम्बर तो
लॉटरी खुल जायेगी
आपका भविष्य सुधारने के लिए
प्रोफ़ेसर बच्चन आ रहे हैं ।

(2)

मम्मी !
कौन बना करोड़पति
हम तो बुद्धू बने

कल रात बैठकर
इडियट– बॉक्स के सामने
एक घंटा बरबाद किया शो में
एक घंटा शो की समीक्षा में
रात को नींद में भी
घूमती कुर्सी थी,
आज के पेपर की तैयारी
ठीक़ से न हो पायी
पर पूरा यक़ीन है मुझे
वो ज़रूर बन जायेंगे
अरबपति
जो उड़ा रहे हैं मजाक
गाँव के ग़रीबों का
स्लमडॉग मिलिनेयर बना के
आम आदमी के ख़्वाबों का
के.बी.सी. दिखा के
रियलटी से दूर
अपनी फिल्मी पापुलरिटी का
वे भरपूर फ़ायदा उठा रहे हैं।

(3)

कोई स्टोरी नही
सेंट का खर्चा नहीं
आसान और हल्का–फुल्का शो
किसी को भी स्क्रीन पर
दिखा दो

किसी से कोई भी सवाल पूछ लो
हींग लगे न फ़िटकरी
रंग भी चोखा हो जाय
ये बिजनेस और कामर्स
खूब समझते हैं
इन्हें किसी से परहेज़ नहीं
जो पैसा दे दे
उसका विज्ञापन
कर देते है
जो रूपया फेंके
उसकी घरेलू पार्टी में नाच देते हैं
कुछ भी मुफ़्त नहीं है
सब विज्ञापनों का खर्चा
ग्राहक की जेब से आता है ।

(4)

मेरा सुझाव है
स्कूल–टॉइम पर
प्रसारित होना चाहिए
केबीसी का शो
ताकि एक टीचर का
खर्चा बच सके
पर फिर
प्राइम टाइम के स्लॉट में
मिलने वाले स्पांसर

कहाँ से आयेंगे ?
सब परिवार वाले बैठ जाते हैं देखने
किसी सवाल का जवाब ऐसे देते है
मानो इन्हीं को मिलने वाली हो रकम
वैसे ही जैसे क्रिकेट का
मैच देखते वक्त
सोफे पर बैठे ही
छक्का लगाते हैं ।

(5)

कब से बन गए
अमिताभ क्विज मास्टर
आमिर खान समाजसेवी
संजय दत्त–बापू के चेले
इनका कोई वास्ता नहीं किसी से
ये केवल पैसे के सगे हैं
बुढ़ापे मे इश्क़िया फ़िल्म बनाते हैं
रोज़ नया स्वांग रचाते हैं
ये जुआरी है, ये बिकाऊ है ।

(6)

मेरे दिमाग में नया आइडिया है
इन बहुरूपियों पर
कोई सीरियल बनाया जाये

पर कौन करेगा स्पांसर उसे ?
किस चैनल पर ?
इसलिए बस लिखकर
ओपन स्पेस पर
(कोई अख़बार छापेगा भी नहीं)
अपनी भड़ास निकाल रहा हूँ
उन ठगों के खिलाफ़
जो बेवकूफ़ बनाने पर तुले हैं
भोली–भाली जनता को ।

*

धरती काँप उठी

कुदरत ने बरपाया अजब क़हर
मीडिया ने पकड़ ली ताज़ा ख़बर
रीयलटी–शो दिखाकर
हादसे का,
दूरस्थ लोगों को
संवेदित करने के लिए नहीं
ऑरिजनल वीडियो फ़ोटो
बेचने के लिए।

होंगी अब डांस कन्सर्ट
करते हुए याद
तबाही के तांडव को,
चौरिटी फंड
जुटाने के लिए ,
एन.जी.ओ. को
सेवा करने का
मौका मिल गया।

पता चल गए
कम्पटीशन की तैयारियों मे
लगें पढ़ाकुओं को
जी.के. के

कुछ और संभावित सवाल :
रिक्टर स्केल क्या है ?
सुनामी कब आयी थी ?
नक्शे से मिट चुके शहर ?
आग में कौन–सी गैस थी ?
सच !
हादसा वही याद रहता है हमें
जिसमें बिछुड़ा हो कोई अपना ।

✷

कारीगर की क़ीमत

रात के ग्यारह बजे थे
ठंड पड़ रही थी –
लाला जी
रेलवे स्टेशन पर
ढूँढते फिर रहे थे
कल्लू हलवाई को
जो गंदी बनियान पहने
कड़ाही मे जलेबियाँ
छानता रहता था
उनकी स्वीट शॉप पर
और आज शाम को
चला गया था रूठकर
तनख़्वाह कम मिलने की वजह से,
कल्लू की तो पता नहीं
कहाँ और कैसे गुज़री रात
लाला जी को भी
दुकान के मशहूर
सुबह के नाश्ते की
बिक्री की फ़िक्र ने
उस रात
सोने नहीं दिया होगा ।

✵

परदेश का फ़रेब

मैं उसके गाँव गया
वहाँ सब कुछ है
पत्नी घर – खेत – भैंस
बस नौकरी नहीं है
जिसे करने आ गया
वो शहर सब कुछ छोड़कर
ढूँढता हुआ प्रगति के अवसर
अब रहता है वो
अकेला
इस शहर के
किसी छोटे–से कोने में
रिक्शा ढोते हुए
जूझता हुआ
स्वयं से – समय से
हक़ीक़त न जानने वाले
गाँव के सीधे लोग मानते हैं
उसको विकसित और
बन जाता है वह प्रेरणास्रोत
बेरोज़गार युवओं के लिए
मैं कनाडा तो नहीं गया
पर लगा सका
कुछ अनुमान
फ़ौरेन माइग्रेशन का
गाँव के इस टूर से !

✷

आम के नाम गुठली के दाम

आम चूसने वाले खास लोग
अक्सर उन्हें गिनते नहीं हैं
आम का वो अचार बनाते हैं
आदमी को लाचार बनाते हैं,
अब दीवाने हैं अचानक सब –
आम की फ़िक्र करते हुये
देते हैं वोट के लिए नोट
बुलाते हैं उसे आप कहकर
दाम बढ़ रहे है आम के
महगाई के गर्म बाज़ार में –
हवा के रुख को देखकर
यारो, लगता है मुझको
आम चुनाव का मौसम
कुछ नज़दीक आ रहा है !

✷

फ़ेस्टीवल ऑफ़ करप्शन

हमारे तीन राष्ट्रीय पर्व हैं –
15 अगस्त 26 जनवरी व 2 अक्टूबर
पर इन सबसे महत्वतपूर्ण है
दीपावली का त्यौवहार
जब मिलती हैं पापा को
ढेर सारी गिफ़्ट उनसे
जिनसे उनका रिश्ता है
ऑफिसी और कुर्सीला ,
राम या रावण, कोई भी जीते
अपनी बला से
हमें तो मतलब
सिर्फ़ मिठाई से
इस बार आ गये
कुछ ज़्यादा ही डब्बे
अम्मा ने कहा–
जा बेटा
थोड़ा दे आ
उस बुढ्ढे बाबा को भी
जो माँगता रहता है
अल्लाह के नाम पर
उससे जयश्रीराम
ज़रूर बुलवाना
हो सकता है
राम जी इसी से
खुश हो जायें
हमारी ज़िन्दगी में
रौशनी हो जाये।

✷

राष्ट्रीय जानवर

लॉमी है स्मार्ट
वह चापलूसी कर सकता है
उसके पास मीठी बाते है
बहाने और दलीलें हैं
अंगूर का लालची है
न लपक पाने पर
उन्हें खट्टा कहता हैं
वह चालाक और शातिर है
शतरंज का खूब माहिर है
आगे की चालों से सतर्क
अपने काग़ज़ात ठीक रखता है
फ़ाइल का पूरां पेट भरता है
बढ़िया और ज़्यादा अंग्रेजी लिखकर
सीधी बात को टेढ़ी कर सकता है
ग़लत को सही बना–दिखा सकता है
उसकी नज़र बस रोटी पर टिकी रहती है
पेट के लिए ज़मीर को भी बेच सकता है
उसको अपना काम निकालना आता है
ज़रूरत के मुताबिक वह
कुछ भी बन सकता है
किसी की खाल ओढ़कर
किसी को भी अपना बना सकता है।
टॉमी है–अलर्ट और वफ़ादार

किन्तु वह सिर्फ़ भौंकता है – गुर्राता है
कभी–कभार ही काटता है.
इसलिए लॉमी का बोलबाला है
आज समाज में हर तरफ़
नौकरी, बिजनेस और पॉलिटिक्स में
सही कहा जॉर्ज आरवेल ने –
सारे जानवर बराबर हैं
पर कुछ जांनवर
औरों से ज़्यादा बराबर हैं –
लोमड़ी किसी देवता का वाहन नहीं
इसलिए यह धर्मनिरपेक्ष भी है
इसे ही होना ही चाहिए
राष्ट्रीय और सामाजिक जानवर –
जो मरे तो भी कहे
"लो–मरो , सब मरो ।"

*

ग्यारह बजे की रस्म

लेते हैं हम
शपथ
हर सांल
ख़ास दिन पर
दो मिनट सीधे खड़े होकर
दोहराते हुए
कागज़ पर लिखे शब्द –
ईमानदार रहने की
सच बोलने की
शांति–सदभाव की
निडर रहने की
निष्पक्ष रहने की –
फिर
भूल जाते हैं
ऐन वक्त
इम्तहान आने पर
सब कसमें और वायदे
प्रेक्ट्रीलिटी की
देते हुए दुहाई ,
खुद को और खुदा को
धोखा देने का
बढ़िया और आसान
तरीका
मिल गया है
हमें ।

✷

प्रत्यक्ष को भी प्रमाण चाहिए

बन गया है बंदा
कागज़ों का पुलिंदा –
सिमट गई है
उसकी लाइफ़
इक फ़ाइल मे –
जिसमें लगे है सर्टीफिकेट
बर्थ– जाति– करैक्टर–पढ़ाई के ,
पहचान है उसकी
आई कार्ड, पासबुक और पासपोर्ट
जिन्हें कराना पड़ता है सत्यापित
सरकारी अफ़सरों से
जिंदा होने के सबूत के तौर पर
ख़ुद की गवाही देने के लिए ,
ज़रूरी है
डैथ का सर्टीफिकेट भी
फ़ाइल की क्लोज़िंग के लिए
पर शुक्र है खुदा का
उसके लिए
ख़ुद नहीं करनी पडती
मशक़्क़त
इंसान को ।

✱

सिस्टम बड़ा है व्यक्ति से

इंदिरा जी जब गुज़री
सन चौरासी में
तो लगा झटका
इंडिया को पर सब़ संभल गया
जल्द ही
और देश बढ़िया चल रहा है
इतने बरसों से ।
लोग आते हैं , लोग जाते है
दुनिया चलती रहती है
किसी के चले जाने से
दुनिया नहीं थमती है
फिर भी न जाने क्यूँ
लगता है उनको डर
'मेरे जाने के बाद क्या होगा'
उस मशीन का
जिसका वह इक पुर्जा थे
और शेल्फ़ लाइफ़ गुज़रने के बाद
उन्हें आज रिटायर कर दिया गया ।
कब्रिस्तान भरे पड़े हैं
इतिहास रचने वाले लोगों से
जिन्हें हम सलाम तो करते हैं
पर दुनिया का काम तो
आज, हम ही करते हैं।
सूरज उगने पर ही मुर्गा बांग देता है
मुर्गे के बांग देने से सूरज नहीं उगता
इंदिरा इंडिया नहीं थी
इंडिया इंदिरा नहीं है ।

✻

लेफ्ट-राइट-सेंटर

हम
भारत के लोग
किसको चुनें संविधान चलाने को –
हाथी का कद छोटा है
हाथ काम नहीं करते
कमल कीचड़ में सना है
लालटेन में तेल नहीं है
दरांती की धार कमज़ोर है
साइकिल के टायर खराब हैं
तराजू के पलड़े विषम हैं
आखिर
प्रतीकों में रखा क्या है !

✷

उसकी कमीज़ मेरी कमीज़ से काली है

बज गया ढोल
खुल गई पोल
कुश्ती का अखाड़ा
एक–दूजे को पछाड़ा।
ये भी गंदे – वे भी गंदे
कर के उन्हें नंगे
हमने सनसनी फैलाई
अपनी फोटो खिंचवाई
कीचड़ उछाला – होगा उजाला
सट्टा लगाकर – सत्ता चलाई
बजाओ ताली
दो सबको गाली
कुछ तो हो रहा है
कोई तो रो रहा है
न बड़ा है न बच्चा
कोई न इससे बचा
खेल ही ऐसा
उलझाये पैसा
कुँआ और खाई
जायें कहाँ भाई
कैसे लडें, कैसे मरें
आख़िर हम क्या करें
सब हैं गोलमोल
मनवा,
तू तो बस
अपनी जय बोल
अपनी जय बोल ।

✷

मार्च का तिगड़मी महीना

सता रही है किसी को
टैक्स बचाने की फ़िक्र
सुनाई देता हर तरफ़
सेल–टॉरगेट का ज़िक्र
कोई चालान काट रहा है
करते हुए ट्रैफ़िक को जाम
नींद उड़ गई बच्चों की भी
चल रहा है उनका एक्ज़ॉम
सबकी छुट्टी रद्द करते हुये
सरकार लगी है ज़ोर–शोर से
अपने बही खाते पूरे करने में
यह क्लोज़िंग महीना है
बैलेंसशीट और सी.आर.का. ,
अगला साल शुरू होने को है
1 अप्रैल से
मूरख बनाने के लिये
आम आदमी और औरत को !

✳

पीले चेहरे वालों का बसंत

सह लेंगे हम जैसे–तैसे
गरमी , बरसात और ठंड
अब तो बस हो जाये अंत
ज़ुल्म का , शोषण का
चाहे न आये कभी बसंत
इंतज़ार कब तक कोई कैसे करे
मौसमी सरकार के बदलने का
समस्याएँ जब हों इतनी ज्वलंत
सब कविता की कोरी कल्पनायें हैं
ज़मीन से कभी नहीं मिलता अनंत
अगर रोटी मिल जाये भूखे बच्चों को
तो वो ही दे देंगे हमें फूलों की सुगंध ।

बाज़ार का खेल

आम पेड़ पर लगते हैं
किसान उन्हें उगाता है
तोड़कर और पकाकर
कोल्डस्टोरेज पहुँचाता है
जिसे बेच कर
उसे पैसे मिलते हैं
इसलिए प्रधानमंत्री सही कहते हैं –
पैसे पेड़ पर नहीं उगते ,
पैसे मंडी में बनते हैं
जहाँ आढ़ती और दलाल
देशी या विदेशीः
सब मिलकर चूसते है
आम आदमी का खून
जो सचमुच बहुत मीठा है
दशहरी आम की तरह ,
उन्हें मतलब है सिर्फ
आम ख़रीदने और बेचने से
कैसे उगते हैं आम
उन्हें उससे क्या लेना देना
बस आमदनी बढ़ानी है अपनी,
आम लोकल फल है हमारा
उसे ग्लोबल बनाने के लिए
आर्थिक सुधारों के तहत
बुला रही है सरकार बाइज़्ज़त
विदेशी कंपनियों को
जो सिखलायेंगी हमें
कैसे उगायें –

बिना गुठली का आम
नमकीन फ्लेवर का आम
चौकोर शेप वाला आम
खास वेरायटी का आम
चिपका कर अपना नाम
रखेंगे वो प्रीमियम दाम
नहीं खा पायेगा हर कोई
पर हो कोई भी सीजन
मॉल में मिलेगा आम
आम का अचार और
आम की चटनी
मल्टीनेशनल कम्पनियाँ बनायेंगी
उनके पास टेक्नोलॉजी है
वो आम की चॉकलेट भी बना सकती हैं
मारकाट मचेगी अब रिटेल मार्केट में
आम आदमी के पक्ष में
कोई खड़ा नज़र नहीं आता,
कल रात
एफ.डी.आई. पर
एन.डी.टी.वी. की डिबेट में
बॉटम–बार में
लगातार डिस्पले किए जा रहे
कोकाकोला के –
सपोर्ट स्कूल कैमपेन को
देखकर मुझे हो गया
पक्का यक़ीन कि
उपभोक्तावाद के इस दौर में
सारे खास लोग
व्यापारियों की ओर झुके हैं ।

*

छोटी दुकान मीठा पकवान

हल्दीराम की दुकान पर
रघ्घू जलेबी छानता है
जिसकी खुद की
मिठाई की दुकान थी कभी
उस कस्बे में
जहाँ का मैं रहने वाला हूँ
उसकी छोटी–सी दुकान के बाहर
खड़ा छोटा बच्चा ही
चिल्ला–चिल्ला कर बुलाता रहता था
सड़क पर गुज़रते हुए लोगों को
'बाबू जी जलेबी खाओ अंदर आओ'
वही उसका विज्ञापन था
ज़्यादा पैसा कमाने
वह इस शहर चला आया
जहाँ उसने पहले खोमचा लगाया
फिर ख़ाक़ छानी
कई जगह और कई तरह की
अंत में अपने हुनर को
भुनाने की कोशिश में
मालिक से कारीगर बन गया ।
मैं पटरी से खरीदता हूँ
सब्जी , किताबें और शर्ट
छोटा मुझे सुंदर और अपना लगता है
बिग बाज़ार में जाने से डर लगता है

वो कहते हैं
वहाँ खूब वैराइटी मिलेंगी
बेस्ट प्राइस पर मिलेगी
कम्प्यूटर की रसीद भी मिलेगी
पर जब भी मैं गया वहाँ
वहाँ जो ज़रूरी नहीं था
वो भी ख़रीद लाया
वहाँ मोलभाव नहीं कर पाता
ट्राली में समान रखते हुए
कुछ अजीब सा लगता है,
हाँ ! मैं कस्बे का रहने वाला हूँ
मेरी सोच कस्बाई है
पर मैं कसाई नहीं हूँ
जो पैकेट की सब्जियाँ
मॉल से ख़रीदकर
पड़ोस गाँव के गाय रूपी
सब्ज़ी विक्रेताओं का
पेट काट दूँ।

✷

सावधान! हम आ रहे हैं

हम ग्लोबल हैं
तुम लोकल हो
हम ही केंद्र में हैं
तुम तो परिधि हो
हमें पूरा हक है
तुम्हें लूटने का
तुम्हारा फ़र्ज़ हैं
ख़ुद को सौंप दो
हमारे पास तकनीक़ हैं
तुम्हारे पास आबादी है
तुम्हारे लड़के–लड़कियाँ
टाई स्कार्ट पहनाकर
तुम्हें ही बेचेंगे
हमारे स्टोर से सामान
सुंदर पैकिंग में
पहले हर माल सड़क पर मिलता था
अब हर सड़क पर हमारा मॉल खुलेगा !

कौन बनेगा अरबपति !

अरब को अंग्रेजी में बिलियन् कहते हैं
उसमें 1 के आगे नौ ज़ीरो होते हैं
लगभग इतनी ही
हमारे देश की जनसंख़्या है ,
भारतमाता के एक बेटे के पास
न जाने
क्या हुनर है
वह आज मालिक है
29 बिलियन डॉलर का
अख़बार की इक रिपोर्ट के मुताबिक़ ।

मुकेश अंबानी वाक़ई अरबों का पति है !

मर जाए अगर वह आज और
उसकी दौलत को
बाँट दिया जाए
सबमें बराबर , तो
सरकारी योजना की
विधवा पेंशन से
ज़्यादा ही पड़ेगी
पर–कैपिटा राशि ।

मीडिया तो मुनीम है
फ़्रंट पेज पर छापकर
इन लुटेरों की खबरें
उन्हें महिमामंडित करता है
जो बपौती और दलाली को
बेशर्मी से भुना रहे हैं ।

ग़रीबी का कारण ज़्यादा पोपुलेशन नहीं है
ग़रीबी का कारण चंद अमीरों की लूट है !

✷

बजट के मौके पर

सरकार की आर्थिक नीतियाँ
तय करती हैं कि
किसी की इनकम
कितनी कम हो
जिससे वह आ जाए
ग़रीबी रेखा के नीचे
इसी तरह
तय होनी चाहिए
अमीरी रेखा भी
जिसके ऊपर
कमाई करने वालों की
इनकम को
बाँट देना चाहिए
ग़रीबों को।
क्यूँ मिनिमम डेली वेजेज
फ़िक्स किए जाते हैं
सिर्फ़ मज़दूरों के लिए
मैक्सीमम डेली वेजेज़ भी
फ़िक्स होने चाहिए
अफ़सरों के लिए
और सबको
उनके किए काम की
दिहाड़ी ही मिलनी चाहिए ,

हाथ के काम की कीमत
कितनी कम होनी चाहिए और क्यूँ
दिमाग़ के काम की क़ीमत से !
समाज के सही अर्थतंत्र के लिए
पुश्तैनी और बपौती के ढाँचे को ढहाना जरूरी है
दलालों और बिचौलियों का ख़ात्मा ज़रूरी है
मुनाफ़ाखोरी और लूट पर लगाम कसना ज़रूरी है ।

✷

क्यू

क्यू इतनी लंबी क्यूँ है
क्यू में मैं क्यूँ लगूँ
काउंटर ज़्यादा क्यूँ नहीं हैं
कम्प्यूटर कम क्यूँ हैं
काम फुर्ती से क्यूँ नहीं करते
प्रोपर सिस्टम क्यूँ नहीं बनता
टोकन डिसप्ले क्यूँ नही होता
इंतज़ार नहीं होता अब
आयेगा मेरा नम्बर कब !
क्यू में खुद खड़े होकर ही
अहसास होता है
सरकारी नियमों के
चक्रव्यूह में उलझे हुए
आम आदमी की
तकलीफ़ और दिक्कत का
काम कहाँ होगा
काम कैसे होगा
काम कब होगा !
किसी को सब्र नहीं
उसूलों की क़द्र नहीं
क्यू तोड़ने में
लोगों को आता है मज़ा
क्यूंकि नहीं मिलती उन्हें
इस ग़लती की सख़्त सजा
बाइपास करने के लिए क्यू

कनैक्शन निकालते हैं
सेटिंग करते हैं
ऊपर से फ़ोन कराते है
सिफ़ारिश लगवाते हैं
एजेंट को ढूँढते हैं
बैक–डोर से अंदर जाते है
और फिर चढाते ह
तत्काली मेवा
सेवा की स्पीड
बढ़वाने के लिए ।
सोचता हूँ
ऐसा ही होता होगा
आगुंतकों के साथ
मेरे ऑफिस मे भी ,
पब्लिक टॉयलेट की तरह
हर पब्लिक ऑफिस की
हालत बहुत गंदी है
सफ़ाई बहुत ज़रूरी है
सवाल उठाना ही काफ़ी नहीं
जवाब भी ज़रूरी है
ज़िम्मेदारी हम सबकी है
रिश्वत लेना भी ग़लत है
रिश्वत देना भी ग़लत है ।

ख़बरदार! बरखुरदार

क्यूँ भटकते हो
टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों पर ?
सीधी राह पर चलो,
ओवरब्रिज पर चढ़कर
प्लेटफ़ार्म पार करो
रेल की पटरियों को
क्रॉस करते हुए
क्यूँ डालते हो
अपनी जान
जोखिम में ?

नियमों को ठीक से
लागू करते हुए फ़ाइल पर
सही फैसले लो
पक्षपात करने के लिए
तथ्यों को तोड़–मरोड़कर
क्यूँ लिखते हो ?
एक्सीडेंट से बचने के लिए
मशीन और मानव की
व्यवस्थित सुरक्षा को
बाई–पास मत करो ।

कुंजी और गाइड पढ़कर
बोर्ड का एक्ज़ाम तो

जैसे–तैसे पास कर लोगे
कम्पटीशन में क्या होगा ?
औरों को धोखा देकर
अपनी आँखों को धूल से
कब तक बचाओगे ?

शार्टकट के चक्कर में
जीवन की नैसर्गिक लय को
कट–शार्ट मत करो
सावधान !
लेवल–क्रासिंग का गेट बंद है
ट्रेन आने वाली है ।

✱

मिल्की कॉन्ट्रैक्ट

दूध खरीदते थे
सीधे ग्वालों से
फिर कॉपरेटिव बन गयी
जब मुनाफ़ा दिखा उसमें
तो प्राइवेट के लिये
खोल दिया सरकार ने
मिल्क सेक्टर को
ढेर सारी डेरियाँ खुल गईं
अब इम्पोर्ट करने के लिये
टेंडर निकल रहा है
जिसके स्पेसीफिकेशन
शराब के ठेके चलाने वाली
विदेशी कम्पनी ने सप्लाई किये हैं
वो ही वैसा दूध बनाती है
कागज़ी कारवाई
पूरी करने के लिये
उसकी सिस्टर कम्पनी को भी
टेंडर मिला है,
मिड–डे मील वाले
बच्चों का पेट
चाहे ख़राब हो जाये
फाइल का पेट
तो भर जायेगा ,
ठेकेदार– दलाल – अफसर– नेता,
सब बहुत खुश हैं
विकास की नई स्कीम के टेंडर जारी होने से।

✳

एक दो तीन

सौदा चलता रहा मंडी का अंधेरी रातों में
जाना मैंने , दलालों की छपी ख़बर पढ़कर
कौन क़ितने में बिका और किसके हाथों में
कब किसने किसको ख़रीदा क्या समझकर
लगती रहती है सबकी बोली अब बाज़ार में
संरेआम नीलामी का अजीब दौर है यहाँ
ग़रीब बिक रहा है अमीर बिक रहा है
हुनर बिक रहा है ज़मीर बिक रहा है
स्पेस बिक रहा है ज़मीन बिक रही है
कबाड़ तो क्या चीज नवीन बिक रही है
कोई बिकता लेबर चौक पे पेट की ख़ातिर
कोई बिकता आईपीएल में पेटी की खातिर
भुनाता है कोई डिग्रियाँ नौकरी के लिए
कोई तोड़ता है पसलियाँ ठेला खींचते हुए
दोस्तों ! जेब का पैसा तय करेगा अब तो
कौन मज़दूर किसके घर में पुताई करेगा
किसकी टीम से कौन खिलाड़ी मैच खेलेगा ।

*

प्रभु ! आओ हमारी रक्षा करो

ग़रीब ब्राह्मण सुदामा और
अमीर गोपाल कृष्ण
पढ़ते थे
एक ही स्कूली– आश्रम में
कृष्ण ने रिजर्वेशन नहीं माँगा
वरन मदद की
अपने ग़रीब दोस्त की
उनमें कोई लड़ाई न थी
न ही वो लिखते थे सरनेम
शर्मा–यादव सरीखे,
अगड़े–पिछड़े के चक्कर में
अगर मिल जाता आरक्षण
उस वक्त
ग़रीब को
तो आज सारे ब्राह्मण भी
सुदामा रख लेते उपनाम
शर्मा की जगह
क्योंकि आज
सरकारी नौकरियाँ हैं केक
और हिस्से का परसेन्ट
तय कर रही है
जन्म–वंशावली ।

✷

जागते रहो

देखकर मेरी शक्ल
सड़क पर
नहीं पुकारा जाता मुझे
नाम से
हर कोई कहता है
'बहादुर जरा इधर सुनो'

सब सोतें हैं
खर्राटे लेते हुए
मैं जागता हूँ
थामे हुए
इक हाथ में डंडा
दूजे में टार्च।

फ़ख्र है मुझे
अपनी बहादुर कौम पर
करती है जो चौकीदारी
बैंक की , दुकानों की
कॉलोनी और मकानों की ।

बस होती है तकलीफ़ मुझे
जब बुलाते हैं नेपाली कहकर
मेरे मालिक

इतने सालों तक
ख़िदमत करने के बावजूद
उनके देश में ,
और करते हैं पहला शक़ वो
मुझ पर
कोई चोरी हो जाने के बाद !

अब कोई चारा नहीं मेरे पास
सौंपा है दुनिया के रखवाले ने
जिम्मा रखवाली का , मुझको
निभाना है उसे खुशी–खुशी
ता–उम्र गश्त लगाते हुए ।

✷

एक बीमार सौ अनार

पार्टी में सब चल रहा था ठीक
साहब को आ गई अचानक छींक
अफ़रा–तफ़री मच गई
किसी ने जेब से रूमाल निकाला
कोई अख़बार से पंखा झलने लगा
कोई दौड़कर पानी की बोतल लाया
किसी ने डॉक्टर को मोबाइल मिलाया
चारों तरफ ख़बर फैल गई
लोग मिलने आने लगे
पपीते और अनार लेकर
फूलों के गुलदस्ते लेकर
दुआयें कर रहे थे
अब सैकड़ों हाथ
आख़िर वो थे दफ़्तर के बड़े साहब !

✷

अंधेरे से उजाले की ओर

कैसे कहूँ मैं दीवाली आई है
चाइनीज़ बल्बों की झालर है
पैकेट में ड्राईफ्रूट– मिठाई है
घर में नहीं बनते पकवान
कैफ़े से काफ़ी मंगवाई है
बाज़ार में बहुत मंहगाई है,
सब आसान है,
तेल निकल जाता था
मिट्टी के दीयों में
घी डालते–बाती लगाते
अब स्विच ऑन करते ही
जगमगाने लगाती है मुंडेर
कितनी रातें जलाओ
कोई मेहनत नहीं ,
नाजुक फुलझड़ी की
चमचमाती रोशनी
कहीं दब गई है
ताक़तवर बमों की आवाज़ में ,
न वो थाल में सजे हुये खील–बताशे
न ही खांड के वो मीठे–प्यारे खिलौने
न चाक से लाया दीपक न रूई की बाती
न कोई खास खुशी न ही नैनों में ज्योति ,
ऑफिस में छुट्टी का माहौल देखकर

पटाखों की कनफोड़ू आवाज़ सुनकर
हैवी डिस्काउंट के विज्ञापन पढ़कर
जुए और शराब की ख़बरें सुनकर
गिफ़्टें ढोते हुए लोगों को देखकर
लगता है मुझको भी, दोस्तों
अब दीवाली आ ही गई है
किसी ने मुझसे पूछा –
दो दीवाली क्यूँ मनाते है !
मैंने सोचा–ठीक ही तो है
छोटी दीवाली भारत की आम जनता के लिए
बड़ी दीवाली इंडिया के बिग बॉसेज़ के लिए
अमीर और व्यापारी की ही सच्ची दीवाली है
ग़रीब और ग्राहक का तो दिवाला है ।
भाषा बदल रही है–शैली बदल रही है
हम प्लास्टिक और कम्प्यूटर के युग में
आगे निकल चुके हैं या राम से रैम की ओर ।

घर पर खड़े रहो दिन भर

गाड़ी खड़ी है
बंगले के अहाते में ,
साहब के बाहर आने का
लंबा इंतज़ार करते–करते
वह ऊब गया है :
चक्कर लगा लेंता
हर पाँच–दस मिनट बाद
बेचैन, थका, झुंझलाता
छोड़ कर जा भी नहीं सकता
कभी गाड़ी के अंदर जा बैठता
कैसेट पर पुराने गीत सुनता
बीड़ी फूँकता बीच–बीच में
गुटका खाता, पान चबाता
मोबाईल पर बतियाता
कभी गाड़ी का दरवाजा खोलता ,
कभी उसे बंद करता
जाने क्या सोचता होगा ...
कैद है वह
गाड़ी का चालक होने के बावजूद
वह गाड़ी ड्राइव करता है
और साहब (व उनकी मैडम)
उसकी ज़िन्दगी ड्राइव करते हैं,
कभी भी फ़ोन घुमाकर बुला लेते हैं
उसे नहीं मालूम होता

कहाँ जाना है।
किसी दोस्त के घर पहुँचकर
खुद तो साहब गपशप और
मौज–मस्ती में
डूब जाते हैं
वह बाहर बैठा
इंतज़ार करता रहता है
कभी–कभार पूछ लेता है
पानी, चाय या नाश्ता
कोई घरवाला ।
मन तो होता होगा उसका
कभी गाड़ी लेकर भाग जाऊँ
या बीच में ही गाड़ी बंद कर
कह दूँ
अब आगे नहीं जा सकती
खराब हो गई
परंतु डरता भी है
झूठ बोलने से
धोखा देने से,
हायर्ड ड्राइवर है
फायर भी तो हो सकता है।
साहब, बाहर निकलकर
एक मिनट भी इंतज़ार नहीं
कर सकते–
वह चाहे घंटों
इंतज़ार करता रहे

बाहर निकलने वाले
नखरैल साहब का
मैडम साथ हों
फिर तो कहना ही क्या,
इंतज़ार भी लंबा
गुस्सा भी ज़्यादा
और उसकी कैद भी कड़ी,
"समय से नहीं आए..
इंतज़ार नहीं किया जाता...
पेट्रोल चुराते हो...
निकम्मे हो..."
यूँ तो हैं, वे साहब भी
अधीर, चोर, और निकम्मे
किन्तु थोड़ा बड़े दर्जे के।

✷

नौ-कर

हुक्म चलाते है मुझ पर
घर के सारे लोग
साहब , बीबी और बेबी –
(1) एक गिलास ठंडा ठंडा पानी तो लाना
(2) बालकॉनी से आज का अखबार उठाना
(3) अंदर वाला कमरा ठीक से साफ कर दो
(4) बाहर तार पर गीले कपड़े सूखने डाल दो
(5) मुन्नी को उसके स्कूल छोड़ते आना
(6) लौटते हुए बाजार से दही लेते आना
(7) फोन को थोड़ा चार्जिंग पर लगा दो
(8) अभी बस गरमा गरम चाय पिला दो
(9) पंखा जरा हाई स्पीड पर करते जाओ –
पिछला काम ख़त्म नहीं हुआ कि
अगले का आर्डर मिल जाता है ,
हैं तो मेरे भी दो हाथ ही
पर मैं हूं इस घर का नौकर
काम तो करने ही होंगे मुझको
चाहे हँसकर चाहे रोकर ।

*

सैंसर

चाहे किताब जला दो
चाहे फ़तवा लगा दो
चाहे पेंटिंग को पोत दो
चाहे फिल्म को रोक दो
जो तुम्हारी नहीं सुनते
उनको जान से मार दो
परंतु कभी भी
आवाज़ बंद नहीं होगी
आवाज़ मंद नहीं होगी
नया और सच –
लिखने वालों की
कहने वालों की
दिखाने वालों की
सोचने वालों की ।

✷

राम नाम सत्य है

देश के सबसे बड़े शहर बम्बई में
उसका जनाजा निकला
जिसमें शामिल हुए लाखों लोग
महानगरी के तीन बड़े बंदर भी –
फ़िल्म , बिजनेस और पॉलीटिक्स के ,
वह वाकई बहुत पॉपुलर था
उसे नकारा बिल्कुल नहीं जा सकता
कार्टून से गुदगुदाता होगा कभी
पर जब से मैंने उसे पढ़ा–सुना
वह कलम से तलवार और बाण चलाता था
वाणी से बस जहर और आग उगलता था
हमेशा कड़वाहट भरी तीखी बातें बोलता था
हिटलर उसका रोल मॉडल था
सब को डराता था, खुद नहीं डरता था
अपनी बनाई सेना को
कमांडर की तरह
कत्ले–आम के लिए हुक्म देता था
हिंसा के लिए भड़काता और उकसाता था
चाहें आतंकवादी न कहें हम उसे
वह नहीं था अलग उस प्रजाति से
जिसमें रखेगा इतिहास
भिंडरावाला, ओसामा या जार्जबुश को ,

क्षेत्रीयवाद का हिमायती था
वह रखता था दिल में
हिंदुस्तान से ऊपर हिन्दू को
राष्ट्र से ऊपर महाराष्ट्र को
पाकिस्तान को पड़ोसी नहीं
भारत का दुश्मन मानता था,
उसकी नज़र छोटी थी
वह संस्कृति की दुहाई देता था
पर दलितों का घोर विरोधी था
नरक कौन जाता है मरने के बाद
मैं यह तो नहीं जानता ठीक से
पर जो स्वर्ग भोग चुका हो
धरती पर
उसे अब मै स्वर्गवासी नहीं कह सकता
खूब शान–शौकत से रहता था
वाइन, बीयर और सिगार की चुस्कियाँ लेते हुए
रिमोट से सरकार चलाता था
वह किंगमेकर–बिगबॉस–डॉन था
अहंकारी था रावण की तरह
पर वह कट्टर रामभक्त था
उसे किसी की परवाह नहीं थी
खुद को कानून से ऊपर मानता था
वह बकैत था , वह जुनूनी था ,
वह अराजकतावादी था !
किसी की मौत पर रोने में कोई हर्ज नहीं है
पर मीडिया जब उसे शेर बनाने में लगा हो
तो सिक्के का दूसरा पहलू रखना

मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ
उसे राजकीय सम्मान क्यूँ दिया गया ?
जिसने संविधान की जमकर धज्जियाँ उड़ाईं
जिसने समाज में दहशत और नफ़रत फैलाई
जिसने कोर्ट और पुलिस का मज़ाक़ बनाया
तर्जनी दिखाकर सबको धमकाया–सहमाया
मैं भली–भांति जानता हूँ यह शिष्टाचार कि
किसी की विदाई पर
उसकी तारीफ़ ही करनी चाहिए
पर क्या करूँ –
मुझे रात भर परेशान किया
उस भगवाधारी प्रेत ने
जो अपनी अजीब विकारधारा लेकर
छाया रहा समाज में किसी साये की तरह
वह खुद तो अपनी शर्तों पर जीता था
पर दूसरों के जीने के लिये शर्तें रखता था
उसने कभी नहीं लिखा–कहा
ग़रीबी– महंगाई– भ्रष्टाचार के खिलाफ़
या महाराष्ट्र के किसानों की खुदकुशी के बारे में
वह तो पाकिस्तान–वेलेंटाइन–ग़ैरमराठी जैसे
बड़े मुद्दों में उलझा रहा
सियासत का नया मॉडल रच गया
नफ़रत का जो बीज लगा गया
क्रिक्रेट की पिच खोदकर

उसको हमारी चुप्पी से
फ़सल उगलने में मदद मिलेगी
इसलिए मुझे लिखना ज़रूरी लगा
इसे श्रद्धांजलि समझो या न समझो
उसकी आत्मा को भगवान शांति दे
कैडर को सद्भाव के लिये दिशा दे ।

✷

बेस्ट बेकरी कांड

जाहिरा तुमने क्यों झूठ बोला
इंसाफ़ का गला घोंट दिया
अपनी जान की ख़ातिर
साथ दिया हत्यारों का
तुम कितनी मतलबी हो।
हाँ, मैं होता तुम्हारी जगह
तो मैं भी यह ही करता
और शायद अपने झूठ के बारे में
कभी सच भी नहीं कह पाता।
किंतु तुम, तुम हो
इसीलिए तो मुझे हक़ है और दुस्साहस
कोसने का तुम्हें
तुम्हारी कायरता के लिए।
मैं तो दर्शक हूँ
तुम्हारी शहादत देखूँगा,
बखानूँगा अखबारों में –
फ़ख्र के साथ कहूँगा
मैंने ही बनाया था उसे हिम्मती
सच बोलने को और
मिलने को उनसे जो भुन गये थे
ज़िन्दा ही उस रात बेकरी में।

✷

भूखे पेट भजन न होई

मेरे पास आया न्यौता
पाठ–कीर्तन का
जिसमें लिखा था
मोटे–मोटे अक्षरों में
"अटूट लंगर भी बरसेगा"

डिशेज़ की वैरायटी का
लंगर
बन गया है अवसर
गेट–टुगेदर का
पार्टी की शक्ल
इख्तियार करता हुआ
पहले आमंत्रित गैस्ट और
वी.आई.पी. को
खिलाते हुए ।

पुण्य है
लंगर खिलाना या
डोलचियों में भरकर
ले जाना घर
अमीर लोगों का ?

हाँ,
यह बात ज़रूर है
कीर्तन सुनने के बाद
उसके शब्दों का असर
चाहे रहे न रहे
पर चलती रहती है
चर्चा भक्तों में
कई दिन तक–
"उसके पाठ में लंगर बड़ा टेस्टी था !"

✷

धर्म और अर्थ

रावण के पुतले को
रहीम भाई ने बनाया
मज़हब के फर्क को
बिजनेस ने मिटाया
समिति ने की ख़रीद
राम ने आग लगाई
रहीम की थी बकरीद
उसने खुशी से मनाई ।

✷

निजता

तुम्हारे आर्य होने से
मैं अनार्य नहीं हो जाता
और तुम्हारे ब्राहमण होने से
क्षुद्र भी नहीं
तुम ठीक हो मैं भी ठीक हूँ
तकलीफ़ तो तभी होती है
जब तुम कहते हो–
"मैं ही ठीक हूँ"
"मेरा भगवान ही सच्चा है"
"मैं सब जानता हूँ"
तुम मुझे गुलाम बनाना चाहते हो
अपनी संस्था का सदस्य बनाकर
मैं संख्या बढ़ाने का अंक नहीं हूँ
मैं सोर्स हूँ ख़ुशी का, सिंक नहीं हूँ ।

✷

विडम्बना

"गौ–हत्या बंद हो के नारे"
लगाने वाले धार्मिक लोग
भैस–हत्या बंद करने की
बात क्यूँ नहीं करते हैं
गंगा की गंदगी को मुद्दा
बनाने वाले आंदोलनकारी
नर्मदा पर बांध बनता देख
आखिर चुप क्यूँ रहते हैं
अंबानी–टाटा–बिरला रोज़
सबको दिन–दहाड़े लूटते हैं
हम सिर्फ़ वालमार्ट से ही
सहमे और डरे रहते हैं
काले धन की चर्चाओं में
उलझे हुए देशभक्त लोग
मंदिर, गुरूद्वारे व आश्रमों मे
क्यूँ गुप्तदान करते हैं
सरकार के भ्रष्टाचार को
हम लाख कोसते रहें,
कॉरपोरेट सेक्टर के
करप्शन को तो हम ही पोसते हैं।

✵

मेरी याद में

तुमने बना दिया राजघाट
मंदिर की तरह
जहाँ कर्मकांड करने लगे
मुझे श्रद्धांजलि देने का,
रख दिया नाम सड़क का
एम.जी.रोड.
जहाँ केवल शोर है
रौंदते हुए वाहनों का
कोई पदयात्री नहीं,
खोल कर संस्थाएँ
मेरे नाम पर
वहाँ किताबें–फ़ोटो जड़ दीं
मुझे म्यूज़ियम बना दिया–
जन्म तिथि को सरकारी छुट्टी
मरणतिथि को 11 बजे की रस्म,
झूठ और हिंसा को
तरजीह देते हुये
रोज मेरा क़त्ल करते हो
ठीक ही तो है
तुम अपने ज़िन्दापिता की बात नहीं सुनते
तो मृत काग़ज़ीबापू की क्यूँ मानोगे,
कुछ लोग तो और चालाक हैं

लगाकर मेरा उपनाम
अपने नाम के आगे
रोज़ भुना रहे हैं
आम आदमी के जज़्बात
मुझे प्रतीक बनाकर
समेट दिया है
चरखे और रामधुन में
पाँच सौ के नोट में
काँग्रेस के वोट में।

*

संघर्ष के साथी

आज सुबह जब मैं दफ़्तर पहुँचा
वर्कशाप के गेट पर भीड़ जुटी थी
सरकारी वर्करों की
जिनमें अक्सर पुरूष ही दिख रहे थे
नारे लग रहे थे ज़ोरशोर से
हक़ों की माँग करते हुए
सिस्टम को गरियाते हुए –
पर दिहाड़ी पर घास काटने वाली औरतें
उसी गेट से अंदर काम पर जा रही थीं
उन्हें किसी ने नहीं रोका या समझाया
वो हड़ताल पर जाने का नहीं सोच सकती
क्यूँकि वे तो ठहरीं असंगठित और मज़बूर
जो महंगाई की मार झेलते हैं
जिनके पेट कुछ भरे हों
वे ही और मांगते हैं,
कोई आमरण अनशन पर बैठता है
खुद को मनवाने का इंतज़ार करते हुये
पर जब कोई आता नहीं बात करने
तो खुद ही तोड़ देता हे व्रत
फ़ेससेविंग के लिये
छोटा समझौता करते हुए
मन को कुछ समझाते हुए ,
कोई धरने पर बैठता है, कोई चीखता है

कहीं फ़ेसबुकिया आंदोलन चलता है
लाउडस्पीकर पर चिल्लाने से
दुकाने बंद करने से – गाड़ियाँ जलाने से
घुड़की और भौं– भौं से
कोई बात नहीं बनेगी
सरकारें बहुत बेशरम हैं
अब तो लड़ना होगा – अड़ना होगा
खिलाफ़त के जो हथियार भोथरे पड़ चुके
उनकी धार को पैना करना होगा
पर उनको साथ लेकर नहीं
जिनके पास खोने के लिये अभी बहुत कुछ है
प्रमोशन–सेलरी–पोस्टिंग और ट्राँसफर !

✷

बग़ावत

मेरे और उनके बीच
लोहे की मोटी सलाखें हैं
मुझे कैदी वो लगते हैं
और उन्हें मैं ,
पर चूँकि उनकी ज़मात ज़्यादा है
तो आवाज़ तो उन्हीं कीं सुनाई देगी
समाज की समझ
और परंपरा की इज़्ज़त को
मुझ (एकला) से खतरा है
वो मुझे सूली पर लटका देंगे
उनसे अलग सोचने के जुर्म में
और अगर फिर भी कुछ दम
बाकी रहा मुझमें
तो तानों के पत्थर मार–मार कर
मुझे खदेड़ देंगे
पागलघर में,
जहाँ से मेरी चीखें
उनकी मीठी नींद में
खलल नहीं डालेंगी।

मौत एक हक़ीक़त

मेरी लाश अभी आयी है
शमशान घाट पर
एक लाश और आ रही है
दूजी अधजली है
तीसरी की राख ठंडी पड़ चुकी है।
तैयारियाँ चल रही हैं
उस इंसानी जिस्म को फूँकने की–
जिसे हम अब तक रिश्तों से बुलाते थे
सभी इंतज़ार में हैं
अर्थी को चिता पर रखते
लकड़ियों से उस ढाँचे को ढाँकते
जिसमें कोई प्राण नहीं है अब
बदबू से बचाने को
सामग्री घी चंदन डालते
आग लगा देंगे हड्डियों के शरीर को
सर्व–धर्म समभाव के शमशान घाट पर
जहाँ एक ओंकार,
हे राम और ओम्शांति लिखा है
क्या सत्य है ?
शायद कुछ भी नहीं
बस यूँ ही लोग खुद को भुलाने के लिए
मंत्र दोहराते हैं जनाज़े की भीड में
नारे–स्लोंगन की तरह–
"राम नाम सत्य है"
सत्य ?
जो था जो नाम से जाना जाता था

या यह है जिसे हम लाश कहते हैं उसकी
राम कहां से आ गया बीच में–
न कभी देखा, न सुना– उसे
और सब शव–यात्राओं में
उसी को सत्य कहते हैं,
मौत एक उत्सव है
अक्सर– जहाँ हो जाती है मुलाक़ात
सब रिश्तेदारों से
जिन्हें वैसे तो फुरसत नहीं मिलती
कोई पूछता है क्या हुआ, कब हुआ
बताते–बताते थक चुका हूँ
मन होता है कैसेट में रिकार्ड कर
उसको चला दिया करूँ
या उनसे सवाल करूँ–
"तुम कर क्या सकते थे
या तुम कर क्या सकते हो।"
औपचारिकताओं के इस काल में
मौत भी एक सूचना रह गई है
और वो अगर दूर कहीं हो
तो अख़बार और टी.वी. में
गिनती संख्या ही बस
कितने मरे , कितने दबे
लो एक लाश और आ गई,
गुज़रती हुई लाश को देखकर
लोग किसको मत्था टेकते हैं
परमात्मा को,
उस आत्मा को,
ख़ुद की मौत के भविष्य को
या डर लगता है उन्हें

अपनी लाश का ।
लाशों की भी स्टेज हैं
नहा धोकर तैयार होने वाली लाश
अर्थी से उतरती हुई लाश
चिता पर लेटी हुई लाश
लकड़ियों से दबी लाश कि
अधजली लाश
अंगारे छिटकाती लाश
राख में बदली हुई लाश
हड्डियाँ चुनी जा रही लाश।

खून, दूध, आँसू और
लाश की राख
सब एक–से होते हैं –
हिन्दू के और मुसलमान के
आदमी के और औरत के
शहरी और गंवार वाले के–
बस उनकी मात्रा
ज़्यादा या कम होती है
उम्र, शरीर के अनुसार।

किसकी शव–यात्रा में
कितनी ज़मात और बारात
इसका भी अभिमान
कौन किस अस्पाताल में मरा
और कितना खर्च करने के बाद
(या आमदनी उन डॉक्टरों को कराने के बाद)

कितनी बड़ी बीमारी से हुई मौत
सब खड़े हैं
लाश के इर्द–गिर्द
सुरक्षा के लिए
या साक्षी, निश्चित करते गवाह बने हुए
कि वह चला गया, जल गया
पूरी व्यवस्था है –
राख में कोई प्राण न रह जाए
भूत को फिर से उठाने के लिए ।
सेवा करते बच्चे और बूढ़े
लकड़ी लगाते लाश में
कंधा देते अर्थी को
दक्षिणा दे रहा है सिरघुटा बेटा
चुटिया वाले पंडित को
जिसने सौंप दिया उसकी माँ के
निर्जीव शरीर को आग में
आखिर किसका पुण्य ?
और डोम के बारे में–
उनका पेशा है
लाशें जलाना
जैसे कसाई का जानवर काटना
जैसे वैश्या का शरीर बेचना
संवेदना सभी की होती है
पेट की भूख ही सच होती है।

✷

माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001

ISBN-81-8212-065-9
Rs.150/-
9 213758980 3571